अध्याय I: परिचय

1.1 सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवाओं (एएफएमएस) के बारे में

"सर्वे सन्तु निरामयाः"

सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवाएँ (एएफएमएस) जो 1948 में अस्तित्व में आयी, युद्ध तथा शांति दोनों में रक्षा सेवाओं की महत्वपूर्ण रसद सेवाओं में से एक है। एएफएमएस का उद्देश्य है -सशस्त्र सेना कार्मिकों तथा उनके परिवारों के स्वास्थ्य को, रोगों से बचाव तथा बीमार एवं घायलों की देखभाल और चिकित्सा द्वारा संरक्षण और बढ़ावा देना। फील्ड क्षेत्रों में सेवा कार्मिकों को चिकित्सा सुविधा प्रदान करने वाले 90 फील्ड अस्पतालों के अलावा, एएफएमएस अपना कार्य निर्वहन पूरे देश में फैले विभिन्न बिस्तर संख्याओं वाले 133 मिलिटरी अस्पतालों[1] के माध्यम से करता है। सेवारत कार्मिकों तथा उनके परिवारों के लगभग 63 लाख आबादी को मुख्य रूप से चिकित्सा सुविधा प्रदान कराने के लिए संरचित, एएफएमएस अंतर्राष्टीय मिशनों पर तैनात सेना यूनिटों तथा देश में प्राकृतिक आपदा या विपत्तियों के मामले में चिकित्सा राहत को भी संपादित करती है।

महानिदेशक सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवाएँ (डीजीएएफएमएस) जो लेफ्टिनेंट जनरल की रैंक का और समस्त एएफएमएस का प्रधान होता है, चिकित्सा भंडार/चिकित्सा उपकरणों के प्रावधान, भंडारण तथा जारी करने; चिकित्सा सेवा के संबंध में अनुसंधान एवं विकास; थलसेना, नौसेना तथा वायुसेना के चिकित्सा अधिकारियों की भर्ती, प्रशिक्षण तथा तैनातियाँ,सशस्त्र सेना के दंत चिकित्सा और नर्सिग सेवाओं का प्रशासन; सशस्त्र सेना चिकित्सा कॉलेज(एएफएमसी) तथा सभी चिकित्सा भंडार डिपो के संचालन एंव रखरखाव के लिए वह जिम्मेदार हैं।

भूतपूर्व सैनिकों तथा उनके आश्रितों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दिसम्बर 2002 में सरकार द्वारा भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना (ईसीएचएस) की स्थापना की गई। ऐसे भूतपूर्व सैनिकों (ईएसएम) तथा उनके आश्रितों जिन्होंने योजना में शामिल होने का विकल्प लिया है, को देश भर में फैले 227 ईसीएचएस पॉलीक्लीनिक के नेटवर्क के द्वारा चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाती है। ये पॉलीक्लीनिक इलाज का लाभ उठाने के लिए प्रथम सम्पर्क बिन्दु के रूप में सेवा देते हैं तथा भूतपूर्व कार्मिकों को आवश्यक बाह्य रोगी देखभाल और दवाईयाँ प्रदान करते है। ईसीएचएस लाभार्थियों को आगे इलाज तथा जाँच की सुविधा पॉलीक्लीनिकों द्वारा रेफर किये जाने पर सेवा अस्पतालों, पैनल में शामिल सिविल अस्पतालों तथा डाइग्नोस्टिक केंद्रों द्वारा प्रदान की जाती है।

एएफएमएस नेशनल कैडेट कोर, तट रक्षक, प्रादेशिक सेना इत्यादि के साथ-साथ अशांत क्षेत्र में कार्यरत अथवा सेना के कमान के अधीन तैनात केन्द्रीय पुलिस/खुफिया बलों को भी चिकित्सा आवरण प्रदान करती है।

[1] थलसेना -111, नौसेना -10 एवं वायुसेना -12

1.2 संगठनात्मक संरचना

एएफएमएस रक्षा मंत्रालय के अधीन अंतर- सेवा संगठन है, जिसमें थलसेना, नौसेना तथा वायुसेना शामिल है। शीर्षस्तर पर महानिदेशक सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा को महानिदेशक चिकित्सा सेवा (डीजीएमएस) थलसेना, नौसेना एवं वायुसेना, जो अपने अधीन अस्पतालों की कार्यप्रणाली को देखते हैं, सहयोग प्रदान करते हैं। डीजीएमएस सैन्य स्वास्थ्य तथा चिकित्सीय मामलों में संबंधित सेवा के प्रमुखों के लिए सलाहकार भी होते हैं। एएफएमएस में सेना चिकित्सा कोर (एएमसी), सेना डेंटल कोर(एडीसी) तथा मिलिटरी नर्सिंग सेवाएँ (एमएनएस) के अधिकारी समाविष्ट हैं। एएमसी में गैर-तकनीकी अधिकारी तथा सिविलियन भी शामिल हैं। एएमसी की मानव शक्ति जो कि 1962 में 40,000 के करीब थी, दिसम्बर 2011 में 57,590 हो गई।

यूनिटों, स्टेशन स्वास्थ्य संगठनों, परिवार कल्याण केंद्रों, जनरल अस्पतालों, बेस अस्पतालों, कमान अस्पतालों तथा शान्ति स्टेशनों के विशेषीकृत केन्द्रों में स्थापित चिकित्सा निरीक्षण (एमआई) कमरों के देशभर के नेटवर्क को एएफएमएस संचालित करता है। फील्ड क्षेत्रों में हताहतों का निकास रेजिमेंटल सहायता पोस्ट (आरएपी), अग्रिम ड्रेसिंग स्टेशन, डिविजन स्तर पर फॉरवर्ड शल्य चिकित्सा केन्द्र की श्रृंखला द्वारा किया जातो है। आरएपी एक ऐसो केन्द्र बिन्दु है जहाँ बीमार तथा घायलों का मुख्यत: आधारभूत इलाज किया जाता है और बाद में तीसरे स्तर पर नियमित इलाज के लिए बेस अस्पताल या कमान अस्पताल भेजा जाता है।

एएफएमएस के अंतर्गत विविध शिक्षण/ प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा एएफएमएस कार्मिकों के विभिन्न वर्गों को व्यावसायिक तथा मिलिटरी प्रशिक्षण दिया जाता है। युद्ध तथा शांति के दौरान चिकित्सा भंडारों तथा ट्रान्सफ्यूजन तरल के लिए चिकित्सा भंडार/ तरल धारक/ पूर्ति ईकाईयाँ प्रबंध करते हैं।

अस्पतालों का वर्गीकरण

थलसेना में अस्पतालों का वर्गीकरण बिस्तरों की संख्या तथा विशेषज्ञों की उपलब्धता के आधार पर तालिका 1 में दिखाये गए विवरणों के अनुसार सेक्शनल (अनुभागीय), पेरिफेरल, मिड जोनल,जोनल, कमान, सेना अस्पताल, (रिसर्च एवं रेफरल) के रूप में की जाती है:

तालिका-1 थलसेना के अधीन अस्पतालों का वर्गीकरण

अस्पताल का वर्गीकरण	बिस्तरों की संख्या	प्राधिकृत मानव शक्ति
अनुभागीय	**10 से 24**	शांति स्थापना (पीई) के अनुसार चिकित्सा अधिकारी (एमओ)
पेरिफेरल	**25 से 99**	पीई के अनुसार एमओ तथा 4 विशेषज्ञ
मिड जोनल	**100 से 299 बिस्तर** संख्या जिसकी गणना कुल गैरिसन की लोकेशन प्लान (केएलपी) के **1.5%** तथा आश्रित पेरिफरल अस्पतालों की 0.70% गैरिसन संख्या के जोड़ से की गई है।	पीई के अनुसार एमओ तथा नौ विशेषज्ञ
जोनल	**300 के ऊपर** बिस्तर संख्या जिसकी गणना कुल गैरिसन केएलपी की **1.5%** तथा आश्रित पेरिफेरल अस्पतालों तथा मिड-जोनल अस्पतालों की 0.2 % गैरिसन संख्या के जोड़ से की गई है।	पीई के अनुसार एमओ तथा इक्कीस विशेषज्ञ
कमान	बिस्तर की संख्या की गणना स्थानीय गैरीसन केएलपी की 1.5% तथा विशेषज्ञ बिस्तरों को प्रदान करने के लिए कमान के सभी गैरीसनों का **0.2** % की संख्या के जोड़ से की गई है।	ज्यादातर सभी विशेषज्ञ तथा अति विशेषज्ञ है।
एएच आर एण्ड आर	सशस्त्र सेना के अधिकारियों तथा अधिकारी रैंक से निम्न कार्मिक (पीबीओआर) की कुल संख्या का 0.1 **%** के रूप में बिस्तर संख्या की गणना की गई है।	कमान अस्पतालों से तुलना करने पर, उनके पास विशेषज्ञ तथा अति विशेषज्ञ हैं।
एमएच सीटीसी	पृथक पीई पर स्थापित किया गया यह सुपर स्पेशलिस्ट अस्पताल है जिसे कार्डियो-थोरेसिस बीमारी के लिए सशस्त्र सेना कार्मिकों/आश्रितों का इलाज सौंपा गया है जिसमें टीबी तथा कार्डियेंक सर्जरी की जरूरत वाले रोगीों का इलाज समाविष्ट है।	

प्रशिक्षण संस्थान

सशस्त्र सेना चिकित्सा कॉलेज पुणे (एएफएमसी), एएफएमएस का प्रधान प्रशिक्षण संस्थान है जिसकी स्थापना मई 1948 में हुई। अन्य चुनिंदा अस्पतालों जैसे - एएच (आरएण्डआर), सीएच (एएफ) बंगलुरू तथा आईएनएचएस अश्विनी मुंबई द्वारा एएमसी अधिकारियों को स्नातकोत्तर प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है। सशस्त्र सेना चिकित्सा कॉलेज का कॉलेज ऑफ नर्सिग चार वर्षों का डिग्री कोर्स भी संचालित करता है।

1.3 लेखापरीक्षा के उद्देश्य

निष्पादन लेखापरीक्षा इस उचित आश्वासन को प्राप्त करने के लिए संपादित की गई किः

- विविध सोपानों को निधि का आवंटन ठोस बजटीय तैयारी के आधार पर किया गया तथा वित्तीय प्रबंधन सामान्य वित्तीय नियमों के अनुकूल था;
- अस्पताल डाक्टर,नर्स तथा पैरामेडिकल स्टाफ की पर्याप्त तैनाती युक्त तथा आधुनिक चिकित्सीय उपकरणों से सुसज्जित है;
- अधिप्राप्ति में किफायत, निरीक्षण तथा अस्पतालों/ रोगियों को दवाओं की समय से आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु ठोस चलन विद्यमान था;
- अस्पताल प्रशासन, जिसमें जैव औषधीय कचरा प्रबंधन भी शामिल है, प्रभावशाली था; तथा
- ईसीएचएस के उदीयमान संगठन को आवश्यक आधारभूत संरचना, चिकित्सा उपकरणों, दवाएं तथा मानव संसाधन प्रदान किए गए हैं।

1.4 लेखापरीक्षा मानदण्ड

निष्पादन के मूल्यांकन के लिए लेखापरीक्षा का मानदण्ड रक्षा अधिप्राप्ति पुस्तिका में दी गयी खरीद की पद्वति, डीजीएएफएमएस का वार्षिक अधिप्राप्ति योजना, वित्तीय शक्तियों का प्रत्यायोजन, सैन्य आदेश, मंत्रालय के अनुदेश, सांविधिक प्रावधानों, चिकित्सा उपकरणों के मानक,युद्व एवं शान्ति स्थापना को नियंत्रित करने वाले मानक, व्यय का वर्गीकरण, तथा डीजीएएफएमएस तथा डीजीएमएस द्वारा बनाये गये एसओपी[2] से प्राप्त किए गए हैं।

1.5 लेखापरीक्षा कार्यक्षेत्र

डीजीएएफएमएस डीजीएमएस (थलसेना, नौसेना तथा वायुसेना), प्रबंध निदेशक, ईसीएचएस, सात बेस अस्पतालों में से चार,[3] छह कमान अस्पतालों (3 थलसेना और एक वायुसेना) में से चार[4],चार स्पेशलिटी सेंटरों[5] (3 थलसेना के अधीन और 1 नौसेना के अधीन), सभी चार सशस्त्र सेना चिकित्सा

[2] मानक संचालन प्रक्रिया

[3] बेस अस्पताल लखनऊ, दिल्ली,बैरकपुर, तथा श्रीनगर

[4] कमान अस्पताल,पूणे, चंडीमंदिर,बैगलरू एवं उधमपुर

[5] थलसेना अस्पताल (आर आर)दिल्ली, मिलिटरी अस्पताल कार्डियों थोरेसिक सेंटर,पुणे,आर्टिफिसियल लिंब सेंटर,पुणे तथा आईएसएचएस अश्वनी, मुम्बई

भंडार डिपो, 26[6] अस्पतालों (सेना के 24 जिसमें 4 फील्ड अस्पताल में वायुसेना/नौसेना प्रत्येक का एक सम्मिलित है), अग्रिम चिकित्सा भंडार डिपो उधमपुर, सशस्त्र सेना चिकित्सा कालेज पुणे, तीन डीजीक्यूए[7] यूनिटें अर्थात सीक्यूए[8] (एम)/सीक्यूए (जीएस) कानपुर तथा एसक्यूएई[9] दिल्ली में वर्ष 2006-2007 से 2010-2011 की अवधि को शामिल करते हुए निष्पादन लेखापरीक्षा जनवरी 2011 से नवम्बर 2011 तक की गई। ईसीएचएस के संबंध में, निष्पादन लेखापरीक्षा में एमडी ईसीएचएस तथा 51 ईसीएचएस पॉलीक्लीनिक्स (21 मिलिटरी स्टेशनों में और 30 गैर -मिलिटरी स्टेशनों में) शामिल किये गये थे।

1.6 लेखापरीक्षा पद्धति

पृष्ठभूमि की जानकारी इकठ्ठा करने के लिए महानिदेशक एएफएमएस तथा एक मिलिटरी अस्पताल में प्राथमिक अध्ययन करने के पश्चात दिनाँक 28 दिसम्बर 2010 को डीजीएएफएमएस के साथ एंट्री कॉन्फ्रैन्स से निष्पादन लेखापरीक्षा प्रारंभ हुई। लेखापरीक्षा मानदंडो पर निष्पादन के मूल्यांकन के लिए जनवरी 2011 से नवम्बर 2011 जैसा कि उपर्युक्त पैरा 1.5 में निर्दिष्ट किया गया है, के दौरान नमूना कवरेज के लिए चयनित ईकाईयों में विस्तृत लेखापरीक्षा संवीक्षा की गई। इस रिपोर्ट को अंतिम रूप देते समय लेखापरीक्षा के दौरान जारी किए गए लेखापरीक्षा टिप्पणी पर प्राप्त उत्तरों को ध्यान में रखा गया है। फरवरी 2012 में रक्षा सचिव को निष्पादन लेखापरीक्षा रिपोर्ट का प्रारूप जारी किया गया था। 6 जुलाई 2012 को रक्षा मंत्रालय तथा डीजीएएफएमएस के प्रतिनिधियों के साथ एक्जिट कॉन्फ्रैन्स में महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा निष्कर्षों पर चर्चा हुई। हमारे द्वारा दी गयी अनुशंसाओं पर मंत्रालय के उत्तर भी इसी रिपोर्ट में शामिल है।

1.7 आभार

हम महानिदेशक सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवायें और उनके अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा उन सभी ईकाईयों के अधिकारियों जहाँ हम गए थे, के संपूर्ण सहयोग के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

[6] एमएच-इलाहबाद, जम्मू, अंबाला, जोधपुर, किरकी, शिलांग, जबलपुर, आगरा, अमृतसर, गंगटोक, जयपुर, देवलाली, अख्नूर, गया, अलवर, लेबोंग, नगरोता, धर्मशाला, तालबेहाट, उमरोई, कोयम्बटुर, तथा आईएनएचएस जीवन्ती, फील्ड अस्पताल श्रीनगर जोधपुर, इलाहाबाद तथा जालंधर

[7] महानिदेशक गुणवत्ता आश्वासन

[8] गुणवत्ता आश्वासन नियंत्रक

[9] वरिष्ठ गुणवत्ता आश्वासन स्थापना